पंचम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

सोलह संस्कारों के अध्ययन के पश्चात् संक्षेप में अब यह जानना जरूरी है कि इस लघु शोध प्रबंध में मैंने क्या पाया और क्या खोया।

यदि मै अपने लघु-शोध-प्रबंध के लिए यह विषय ना लेती तो मैं संस्कारों को बारे में कभी भी इतनी गहराई से नहीं जान पाती। आज के युग में जहाँ पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिन पर दिन बढता चला जा रहा है। और आज जहाँ आदमी आदमी का दुश्मन हो रहा है ऐसे विषाक्त वातावरण में फिर से संस्कारों को अपनाने की कितनी आवश्यकता है यह मैंने सोलह संस्कारों के अध्ययन के पश्चात् ही जाना। आज समाज में कितनी वैज्ञानिक उन्नति हो रही है। सुख संपन्नता के साधन उत्पन्न हो रहे है पर इन साधनों को अपनानेवाला मानव कितना पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। यदि हम इसमें कुछ परिवर्तन करना चाहते है, श्रेष्ठ मानव को देखना चाहते है तो संस्कारों का सहारा लेना हमारे लिए अत्यंत अत्यावश्यक है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय में मैंने प्रेमचंद जी की कहानियों में प्रतिबिंबित विवाह संस्कारों पर प्रकाश डाला है। प्रेमचंद जी की हानियों को पढने के पश्चात मैंने देखा कि संस्कार किसी ना किसी रुप में उनकी कहानियों में विद्यमान है। कुछ कहानियों के शीर्षक तो संस्कारो के नाम पर ही रखे है। जैसे `नया विवाह`। परंतु सभी संस्कारों को न लेकर मैंने अपने लघु शोध प्रबंध की सीमा के अंतर्गत आनेवाले विवाह संस्कार को ही लिया है। मूल रुप से विवाह संस्कार सभी प्रांत के हिंदुओं में एक जैसा ही है परंतु कुछ रीति रिवाजों के आ जाने से विवाह संस्कार में भी परिवर्तन आ गया है। इन सभी रीति रिवाजों का मैंने विश्लेषण किया है। उदाहरण स्वरुप कुछ कहानियों में `कुवरकलेवा`, `मुँह दिखाई`, पलंगाचार, गौना आदि रस्मों का उल्लेख मिलता है। आज यह रस्मे धीरे धीरे समाप्त हो रही है। क्योंकि उनकी उपयोगिता उस समय थी जब बालविवाह हुआ करते थे। पर आज समझदार लडके लडकियोंका विवाह होने के कारण ये

सब कुछ खतम सा हो रहा है। विवाह संस्कार को पढने के पश्चात् मैंने विवाह संस्कार के प्रत्येक विधि विधान के महत्व को जाना। इन विधि विधानों को करने से लडके लडकी के हृदयपर बहुत अच्छा प्रभाव पडता है। इस दृष्टि से `दो सखियाँ` कहानी महत्वपूर्ण है। यह कहानी दो सखियों के पत्रों से भरी पडी है। इस कहानी में विवाह के बहुतसे संस्कार आये है। विवाह का महत्व, पत्नी का कर्तव्य,सास ननद का आचरण पतिप्रेम, विरह वेदना जो विवाह से ही संबंधित है इसी से ही यह कहानी परिपूर्ण है।

पहले विवाह संस्कार विधि पूर्वक होने के कारण शायद उनका ही असर रहा होगा कि मनुष्य तलाक देणे में संकोच करते थे।

विवाह संस्कारों में प्रमुख पाँच लोगों का उल्लेख कुछ कहानियों में आया है। उदा` मर्यादा की वेदी` कहानी। पहले उनकी उपयोगिता थी पर आज रहन सहन के तौर तरिके बदल जाने के कारण इनका महत्व कम होता जा रहा है। यह पाँच लोग ब्राह्मण,धोबी, नाईन,कुम्हार मालिन हुआ करते थे। वैसे देखा जाय तो इनकी आवश्यकता आज भी पडती है लेकिन इनका रुप अलगसा हो गया है।

प्रेमचंद जी ने अपने समाज के खुली आँखों से देखा और उन्होने विवाह संस्कार में उत्पन्न होनेवाली विभिन्न कुरीतियों को भी विस्तार से चर्चा की। बाल विवाह दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, प्रेमविवाह आदि समस्याओं का चित्रण किया।

उनकी `कुसुम`,`नया विवाह`,`एक आँच की कसर` आदि कहानियाँ विवाह संस्कार के अंतर्गत आनेवाली कुरीतियों से संबंधित है। `कुसुम` कहानी में एक पतिव्रता को दहेज के कारण पति द्वारा ठुकराने से उसकी जो दु:ख अवस्था हुई उसकी मनोव्यथा का मार्मिक चित्रण किया गया है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंदजी ने दहेज प्रथा किस हद तक कुप्रथा है यह समाज के सामने लाया है। इसी तरह दहेज प्रथा से संबंधित उनकी `एक आँच की कसर` कहानी में उन्होंने पिछले दरवाजे से दहेज लेनेवालों का पर्दाफाश किया है।

हिंदुओं में वधू के पिता पर विवाह का अधिक बोझा पडता है और आज यह एक समस्या है। यह समस्या दहेज प्रथा के कारण उत्पन्न होती है। जिस परिवार में ५-६ लडकियाँ होती है उनके माँ पिता उनकी भविष्य की चिंता से ही जीवन भर दु:खी रहते है। प्रेमचंद जी ने इसे अपनी कहानियों में दर्शाकर परिवार नियोजन के महत्व को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। जिसका महत्व इतने सालो बाद आज हमें मालूम हुआ जो प्रेमचंद जी अपने जमाने में जान चुके थे। इसी कारण उन्हे युगप्रवर्तक कहना उचित होगा।

बाल विवाह के प्रश्न को `सुभागी`, `नैराश्य लीला` कहानी में दिखाया है। आज यह प्रथा बंद हो गई है। इसका समूचा श्रेय इन महान लेखकों को ही देना चाहिए।

आज के बदलते परिवेश में विधवा को भी विवाह करने का पूरा अधिकार प्राप्त है। युगों से हृदयपर जमें संस्कार आज की बदलती परिस्थिती में बदल रहे है। `धिक्कार`, `अलग्योझा` कहानी में विधवा विवाह का समर्थन किया है। इससे प्रेमचंद कितने आधुनिक विचारधारा के प्रवर्तक थे इसका बोध होता है।

वेश्या की लडकी के विवाह की समस्या को भी उन्होंने `आगा पीछा` कहानी के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद जी ने रस्मों रिवाजों को महत्व तो दिया ही है साथ साथ इन रस्मों का आडंबर न दिखाकर कोर्ट मैरिज को भी प्राधान्य दिया है। जो आज के महँगाई के जमाने में योग्य ही लगता है।

तृतीय अध्याय दाम्पत्येत्तर सफल असफल संबंधों का है। विवाह पश्चात जब कोई लडकी वधू बन कर ससुराल जाती है तो उसको भिन्न भिन्न प्रकार की भूमिकाएँ निभानी पडती है। वह पत्नी के साथ साथ भाभी, देवरानी, जेठानी, चाची, ताई आदि होती है। परिवार के मधुर संबंधो के लिए या इस को इस प्रकार से कह सकते है कि दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिए इन संबंधो का महत्व भी

है। प्रेमचंद जी ने संयुक्त परिवार में इन संबंधों को समीप से देखा है इसलिए उनकी अधिकांश कहानियों में इन संबंधो का संदर्भ आया है। जैसे अलग्योझा कहानी यह कहानी पूर्णत: संयुक्त परिवार पर ही आधारित है। लेकिन आज स्थिति में परिवर्तन आया है। परिवार की सीमा छोटी हो गई। संयुक्त परिवार कहीं दिखाई नहीं देता। स्वतंत्र परिवार का नारा और साथ ही साथ हम दो हमारे दो का नारा चल रहा है। परिवार में पति पत्नी एक लड़का और एक लड़की ही होती है। इस कारण चाचा, मौसी, चचेरी बहन ये रिश्ते समाप्त हो गए है।

पहले नन्द को सावन की बिजली यों कहा जाता था। पति पत्नी में झगडा इसी के कारण होता था। किसी परिवार में भाभी भी नन्द के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करती। नन्द को सताने में उसे आनंद मिलता है। जैसे बेटोंवाली विधवा या सुभागी कहानी। इन कहानियों में प्रेमचंद जी ने भाभी और नन्द के कटु संबंध को दर्शाकर असफल विवाह संबंध को दिखाया है। लेकिन बदलते जमाने के साथ नव पिढी शिक्षित हो गई है विचारों में बदलाव आ गया है। नन्द या भाभी एक दूसरे से सहेली या बहन के रिश्ते से रहने लगे हैं। नन्द एक बहन या सहेली बनकर आती है और भाभी के साथ मधुर संबंध स्थापित करती है और सफल दाम्पत्य जीवन व्यतीत करती है। अपनी कहानियों में नन्द भाभी के मधुर और कटु दोनों संबंधों को चित्रित किया है। प्रेमचंद जी की कहानियों में सास बहू का संबंध कहीं पें कटु है तो कहीं पे मधुर है। लेकिन आज के युग में स्वतंत्र परिवार की पध्दति के कारण और बहुओं का नौकरी करने का कारण बहू को सास की जरुरत रहती है। इसलिए उनमें मधुर संबंध रहते है। इन सब रिश्ते को, संबंधों को परिस्थिति नुसार भिन्न भिन्न प्रकार से प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में दर्शाया है।

विवाह संस्कार और दाम्पत्येत्तर संबंध के पश्चात चौथा अध्याय अंतिम संस्कार या जिसे अन्त्येष्टि कहा जाता है आता है। जिस को प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में अनेक रुपसे स्थान दिया है। कुछ कहानियों में तो इस संस्कार का संकेत मात्र मिलता है तो कुछ कहानियों में विस्तार से वर्णन। उनकी कहानियों में

कुछ कहानियाँ तो शीर्षक सहित अन्त्येष्टि संस्कारों से परिपूर्ण है। जैसे ` मृतक भोज,` कफन `,` बेटोवाली विधवा`,` स्मृति का पुजारी` । प्रेमचंद जी ने अन्त्येष्टि संस्कार से संबंधित अपनी सभी कहानियों में मृत्यु के आभास से तेरहवी और बरसी तक के विधियों को सम्मिलित किया है और प्रसंगानुसार समुचित स्थान प्रदान किया है। इन विधियों के साथ साथ उन्होंने उनसे उत्पन्न कुप्रथा को भी अपनी कहानियों में रखकर समाज को जागृत करने का प्रयत्न किया है।

` मृतक भोज` कहानी अन्त्येष्टि संस्कार के अंतर्गत होने वाले बिरादरी भोज की प्रथा और उसके दुष्परिणाम को दिखाया है। इस कहानी में एक ऐसे परिवार का चित्रण हुआ है जो मृतक भोज के कारण सर्वनाश को प्राप्त हुआ है। संपूर्ण कहानी पर एक विहंगम दृष्टिपात करने से पता चलता है कि मृतक भोज के आयोजन को लेकर इस कहानी का विकास हुआ है और कहानी की नायिका` रेवती ` का गंगा में डूब कर आत्महत्या करना कहानी की चरम सीमा और अंत भी है। कहानी का शीर्षक ही अपने आप में स्पष्ट और समर्पक है। कहानी का उद्भव विकास और अंत भी इसी शीर्षक के चारो ओर हुई घटनाओं से प्रभावित है।

` मृतक भोज` कहानी का उद्देश्य अन्त्येष्टि संस्कार के अंत में ब्राह्मण भोज के साथ जोड दिए गए बिरादरी के भोज के द्वारा हुए दुष्परिणामों को दिखाना है। बिरादरी के भोज का आयोजन को और इसी का प्रतिष्ठा का प्रश्न बना दिया गया है। इस कहानी में विरोध हुआ है।

आज के आधुनिक परिवेश में मानव अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। जिस प्रभाव उसके विचारों पर भी पडा है। धार्मिक विधि,विधानों के प्रति भी नगरो और महानगरों में बसे व्यक्ति यों के मन में उदासिनता आई है। अत: परंपरागत ढंग से कोई संस्कार,पूजापाठ या अनुष्ठान करना कठिन सा दिखाई देता है। विवाह अब कोर्ट में जाकर होने लगे है। श्मशान भूमि का स्थान विद्युत शवदाह गृह ले रहे है। शव को एक ट्रॉली में रखकर दाह क्रिया की जाती है।

यद्यपि संस्कारों के विधि विधानों में समयानुसार अनेक परिवर्तन हुए है। सभ्यता से प्रभावित भौतिक वादी युग में इन संस्कारों की कुछ भी आवश्यकता अब नहीं रही। ऐसा नही कहा जा सकता। अतित में जो बाल्यावस्था, शैक्षणिक और विवाह संस्कार किए जाते थे उनके द्वारा क्रमबध्द रुप से एक नई सुसंस्कृत पीढी तैय्यार होती चली जाती थी। आज समाज में जो विषय लोलुपता स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार देख रहे है उसका कारण संस्कारों का अभाव है। संस्कारों के कारण सुसंस्कृत युवा पीढी तैयार होती है लेकिन उसके आडंबर के कारण इसका महत्व कम होता है। संस्कारों का प्रयोजन ऐसे मानव समाज का निर्माण करना है जिसके लिए ये भौतिक योजनाएँ बनाई जा रही है।

विवाह संस्कार के विधि विधानों से भावी आयुष्य पर उचित और सुंदर प्रभाव पडता है। आज पहले इतने रस्मो रिवाज नहीं रहे लेकिन संक्षिप्त रुप में उन रस्मों को अब भी स्वीकारा जाता है। मेरा यह मत है कि समाज कितना भी आधुनिक क्यों न हो आधुनिकता से यह मतलब नही कि हम अपनी संस्कृति को ही भूल जाए।

इसी कारण प्रेमचंद जी ने मानव जीवन के परिष्कर हिंदू संस्कृती तथा राष्ट्र निर्माण के लिए जीवन विकास के लिए अपनी रचनाओं में संस्कारों के चारो ओर जमी हुई काई को हटाकर उसका सचित्र चित्रण किया है और ऐसे ही साहित्य की, उसके सृजन की आवश्यकता है।

आधार ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

शोध प्रबन्ध में विवेच्य प्रेमचंद जी के आधार ग्रंथ —

१) मानसरोवर भाग-१- भारतीय ग्रंथ निकेतन
२७१३ कूचा चेलान,दरियागंज नयी दिल्ली
११० ००२

२) मानसरोवर भाग-२- हंस प्रकाशन
नवीन संस्करण अक्टूबर १९७९
इलाहाबाद

३) मानसरोवर भाग-३ हंस प्रकाशन
नवीन संस्करण अप्रैल १९८१
इलाहाबाद

४) मानसरोवर भाग-४ भारतीय ग्रंथ निकेतन
२७१३ कूचा चेतन,दरियागंज नयी दिल्ली
११० ००२

५) मानसरोवर भाग-५ भारतीय ग्रंथ निकेतन
२७१३ कूचा चेलान,दरिया गंज नयी दिल्ली
११० ००२

६) मानसरोवर भाग-६ भारतीय ग्रंथ निकेतन
२७१३ कूचा चेलान,दरियांगज नयी दिल्ली
११० ००२

७) मानसरोवर भाग-७ भारतीय ग्रंथ निकेतन
२७१३ कूचा चेलान,दरियागंज नई दिल्ली
११० ००२

८) मानसरोवर भाग-८ भारतीय ग्रंथ निकेतन
२७१३ कूचा चेलान दरियागंज नई दिल्ली
११० ००२

••

संदर्भ ग्रंथ सूची

(१) ' हिन्दू संस्कार'
सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन - डॉ.राजबली पाण्डेय
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

(२) लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - प्रगतिप्रकाशन
जागरा

(३) ' संस्कार चंद्रिका' - डॉ.सत्यव्रत सिध्दांतालंकार

(४) शृंखला की कड़ियाँ - महादेवी वर्मा
भारतीय भंडार

(४) आ.चतुरसेन के उपन्यासों में नारी चित्रण - डॉ.सुखदेव हंस
भारतीय ग्रंथ निकेतन

(५) हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण - महेन्द्रकुमार जैन

(६) ' गोदान ' - प्रेमचंद
भारती भाषा संस्करण
दिल्ली संस्करण प्रथम संस्करण
१९८७

(७) ' कामायनी' लज्जासर्ग - जयशंकर प्रसाद
प्रकाशक - रत्नशंकर प्रसाद
प्रसाद मंदिर
छात्रसंस्करण प्रथम १९७९

(८) मनुस्मृति

(९) ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी